Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

# पंजाबी भाषाई शास्त्रीय बंदिशों के सरंक्षण में पंजाबी अकादमी, दिल्ली का योगदान (पंजाब के पारम्परिक संगीत के संदर्भ में)

**SAVITA[1]& DR. TEJINDER GULATI[2]**

[1]Research Scholar, Department of Music, Guru Nanak Dev University, Amritsar
[2]Assistant Professor, Department of Music, Guru Nanak Dev University, Amritsar

## सारांश

पंजाब की प्राचीन कला और संस्कृति न केवल पंजाब में बल्कि पूरे भारत में एक मूल्यवान संपत्ति है। पंजाब ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और यह शास्त्रीय संगीत में प्रचलित पंजाबी भाषाई बंदिशों के रूप में विद्यमान है। पंजाबी अकादमी, दिल्ली ने पंजाब के इस बहुमूल्य योगदान को आधुनिक युवा पीढ़ी के सामने पेश करने और सरंक्षण करने हेतु 'पंजाब के पारम्परिक संगीत का उत्सव' नामक कार्यक्रम का आयोजन करके, पंजाब के पारम्परिक संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस शोध कार्य के लिए, पंजाबी अकादमी, दिल्ली द्वारा स्थापित 'पंजाब के पारम्परिक संगीत का उत्सव' के व्यवस्थित और रिकॉर्ड कार्यक्रमों की ऑडियो-वीडियो टेप और सीडी का उपयोग किया गया है। इस शोध कार्य से यह तथ्य सामने आया है कि पंजाबी अकादमी, दिल्ली शास्त्रीय संगीत की पंजाबी भाषाई बंदिशों के क्रियात्मक पक्ष को सरंक्षित करने और युवा पीढ़ी में पुनः जागरूक करने में चौबीस वर्षों से कार्यरत रही, और एक बहुमूल्य योगदान दिया। इस अध्यन से यह भी सामने आया है कि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में पंजाब तथा अन्य प्रान्त के कलाकरों ने इन पंजाबी भाषाई बंदिशों को अपने पास सुरक्षित रखा और इनको क्रियात्मक पक्ष में सरंक्षित करने में भी अपना एक विशेष योगदान दिया है।

**संकेत शब्द**: पंजाबी अकादमी दिल्ली, पंजाबी भाषाई बंदिशें, सरंक्षण, शास्त्रीय संगीत, योगदान, पारम्परिक

## भूमिका

किसी भी प्रदेश की कला तथा संस्कृति से उस प्रदेश के जन जीवन की आर्थिक राजनैतिक तथा सांस्कृतिक गतिविधिओं के बारे में स्पष्ट रूप से ज्ञान प्राप्त होता है। संस्कृति तथा कला जितनी प्राचीन होगी उतना ही उसके इतिहास को जानने और समझने का अफसर प्रधान होता है। पंजाब भारत के उस भाग में से एक है जिसने अपने सीमा प्रदेश के निकट होने के कारण विभिन्न प्रकार गतिविधिओं का सामना किया और अपने अंदर अनेकों प्रकार की नई गतिविधओं को पल्वित होने दिया। पंजाब की संगीत परम्परा हिंदुस्तानी संगीत के आरम्भ से ही केंद्रीय स्त्रोत के रूप में विद्यमान रही है। हिंदुस्तानी संगीत में पंजाबी सभ्याचार तथा पंजाब की विभिन्न सांगीतिक परम्पराओं के चिन्ह अनेक जगह पर प्रदर्शित होते रहे है। गायन की विभिन धाराओं लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत सूफी संगीत, तथा गुरमत संगीत पंजाब में मौलिक रूप से प्रफुलित हुए। पंजाब के लोक संगीत तथा गुरमति संगीत में प्रयुक्त रागों के स्वरूप से भारतीय राग संगीत परम्परा के खजाने में दुगुनी चैगुनी वृद्धि हुई। यहाँ पंजाब में विकसित और प्रफुलित विभिन्न गायन शैलियों के द्वारा भारतीय संगीत की गायन परम्परा में पंजाब का स्मरणीय स्थान तथा योगदान रहा, वहीं पंजाब अंचल में पनपित अनेक समृद्ध घरानों तथा कलाकारों की कुशल रचनाओं का योगदान भारतीय शास्त्रीय गायन की पंजाबी भाषाई बंदिशों के रूप में विद्यमान है।

## बंदिश अर्थ व परिभाषा

बंदिश से मूलतया गायन सवरूप का भेद पता चलता है जिससे राग का स्वर, भाव, तथा काव्य आदि का बोध होता है। "तेरहवी शताब्दी में पंडित शारंग देव ने संगीत रत्नात्कर ग्रन्थ में बंदिशों के दो अंग बताये है वाक अर्थात भाषा एवं गेय अर्थात स्वर लय ताल व राग। इन्ही को क्रमशः धातु व मातु का नाम दिया गया है। उनके अनुसार धातु यानि राग स्वर लय ताल इत्यादि तथा मातु यानि गीत दोनों का एक साथ निर्माण और सामजस्य हो जाने पर संगीत की बंदिश तैयार होती है।"2 संगीत के पक्ष में बंदिशों में प्रयुक्त काव्य तथा भाषा से बंदिशों के रचनाकार तथा रचनाकाल का सुनिश्चित संकेत प्राप्त हो जाता है, जो संगीत के इतिहास को प्रमाणिक करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

## पंजाबी भाषाई शास्त्रीय बंदिशों का इतिहास

पंजाब की संगीत परम्परा की विविध धाराओं में से उत्पन रागों के गायन रूपों के अतिरिक्त इस योगदान की एक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति भारतीय शास्त्रीय जगत में प्रचलित पंजाबी भाषाई बंदिशें हैं। पंजाबी भाषा में प्रचलित ये गायन बंदिशें भारतीय शास्त्रीय संगीत की अलग अलग शैलियों में पंजाब की संगीत परम्परा के प्रमुख केंद्रित केन्द्रकारी स्थान का प्रत्यक्ष प्रमाण है। ये गायन बंदिशें मूल रूप में पंजाबी और इसकी उप भाषाओं में रची हुई है"3 उत्तरी भारतीय शास्त्रीय संगीत की ख़याल गायन विधा में अनेक पंजाबी भाषाई बंदिशे उपलब्ध होती है। भारतीय इतिहास के प्रचलित मत के अनुसार इस गायन शैली का जन्म 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जौनपुर के तुर्क शासन सुल्तान हुसैन शाह शर्की तथा उसके दरबारी गायकों द्वारा हुआ। परन्तु जो ख़याल गायन का स्वरुप आधुनिक समय में प्रचलित है वह 18 वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में मुग़ल सम्राट मुहमद शाह रंगीले के दरबारी गायकों सदारंग-अदारंग के विशेष संदर्भ में मिलता है। उन्होंने अनेक ख़याल बंदिशों की रचना हिंदी तथा पंजाबी भाषा में की और भारतीय संगीत की धरोहर को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाया। "ख़याल गायन के स्तम्भ स्वरूप सदारंग ( नियामत खान ) और अदारंग ( फिरोज़ खान) भारतीय संगीत की विभूति है और पंजाब के अंचल के लिए विशेष गर्व का कारण है क्योंकि इन दोनों की पंजाबी भाषा में रचित ख़याल की बंदिशें इनके पंजाबी होने के तथ्य की और सुनिश्चित संकेत करती है। इनकी भाषा की प्रवृति इनके मुल्तानी होने का स्पष्ट आभास देती है। जैसे -

राग भीमपलासी , त्रिताल (मध्यलय)

स्थाई - ढोलन मैंडे घर आवीं

सोना मियाँ तो मैं वी तैंडे सड़के जांवां।

अंतरा- मुख वेखां तां मैं जीवां

सदरंगीले दरस तांडा पांवां।

जिस प्रकार उपरोक्त वर्णित बंदिशों में तैंडे , मैंडे , सुनाउंदा , लाउँदा आदि मुल्तानी तथा पंजाबी भाषा के शब्द है इससे यह अनुमान लगाना उचित हो जाता है कि यह कलाकार पंजाबी थे और इनकी पंजाबी भाषा मुल्तानी बोली की तरफ झुकी हुई थी।"4 इन महान कलाकारों के उपरांत भी इनके वंशजों ने अनेक पंजाबी भाषाई ख़याल बंदिशों की रचना की जिनमें मियाँ शोरी, मीरां बख्श, फतेह अली अलादिया, फतेह अली, बड़े गुलाम अली खान इत्यादि नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त पंजाब के बाहर के कलाकारों में उस्ताद इनायत खां, मनरंग आदि के नाम उल्लेखनीय है।

## अनुसंधान कार्य विधि

इस कार्य में आधुनिक पीढ़ी के लिए पारम्परिक पंजाबी शास्त्रीय बंदिशों के विकास, प्रचार और संरक्षण के लिए पंजाबी अकादमी, दिल्ली के दिए गए योगदान का अध्ययन किया गया है। सामग्री इक्ट्ठा करने के लिए प्रश्नावली तकनीक तथा आयोजित समारोहों से संबंधित ऑडियो-वीडियो सीडी का प्रयोग किया गया है।

## उद्देश्य

- पंजाबी अकादमी द्वारा आयोजित 'पंजाब के पारम्परिक संगीत उत्सव ' नामक समारोह का अध्ययन करना।
- पंजाबी भाषाई शास्त्रीय बंदिशों के सरंक्षण में पंजाबी अकादमी के दिए गए योगदान का अध्ययन करना।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

**विषय प्रवेश**

पंजाबी और पंजाबी संस्कृति का विस्तार पूरी दुनिया में हुआ है। दिल्ली भारत में वह जगह है जहां लोग सार्वभौमिक रूप से बसे हुए हैं और अपने सर्वव्यापी देश की संस्कृति को अपनाते हैं। इसलिए दिल्ली को 'मिनी भारत' भी कहा गया है। सबसे अधिक भाषा बोलने वाली आबादी पर विचार करने के बाद, दिल्ली मंत्रालय ने पंजाबी, हिंदी और उर्दू की विभिन्न भाषाई, कला और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए तीन अलग अलग संगठन बनाए। पंजाबी अकादमी उन संगठनों में से एक है जिसकी स्थापना दिल्ली में पंजाबी भाषा, कला और संस्कृति के प्रचार और विकास के लिए की गई थी। "केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली की मिश्रित संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में पंजाबी भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रसार, प्रचार और विकास के लिए वर्ष 1981-82 में दिल्ली प्रशासन ने पंजाबी अकादमी की स्थापना की ।5 वर्ष 1994 में अकादमी ने पंजाबी कला और सांस्कृतिक गतिविधियों में शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यक्रम का आयोजन शुरू किया।

'पंजाब के पारम्परिक संगीत का उत्सव' पारम्परिक पंजाबी शास्त्रीय संगीत पर आधारित है जिसका हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। कार्यक्रम का आयोजन दिल्ली सरकार की सुविधा के तहत पंजाबी अकादमी दिल्ली द्वारा किया जाता था। जिसमें दिल्ली सरकार के कला, संस्कृति और भाषा विभाग का भी सहयोग रहता था। 1994 में 'पंजाब की पारंपरिक कलाओं का त्योहार' से शुरू किया गया उत्सव वर्ष 1995 में 'पंजाब के पारम्परिक संगीत का उत्सव' नाम से जाना जाने लगा। इस उत्सव का महत्वपूर्ण उदेश्य पंजाबी पारम्परिक संगीत का प्रचार प्रसार करना ही नहीं था बल्कि पंजाब के शास्त्रीय संगीत की धरोहर पंजाबी भाषाई शास्त्रीय बंदिशों और गायन शैलिओं के विशेष योगदान को लोगों के समक्ष लाना और पुनः जागृत करना था। राजकुमारी अनीता सिंह जी ने जोकि तत्कालीन अकादमी की गवर्निंग काउंसिल की सदस्य थी, जी ने इस कार्य को बहुत प्रेरणा और उत्साह के साथ करवाया। "यह समारोह पंजाब के शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार, विकास और सरंक्षण हेतु शुरू किया गया था इस समारोह की हिदायत ही पंजाब की पारम्परिक बंदिशों का गायन पंजाब में पल्वित शैलियों में करना था, चाहे कलाकार ग्वालियर या अन्य घराने का ही क्यों ना हो उन्होंने ने भी इन बंदिशों को ख़याल, ठुमरी, टप्पा और काफी शैलियों में गाया। तांकि जो पंजाब का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में योगदान रहा है उसको समाज के सामने लाया जा सके और उस संगीत का सरंक्षण किया सके।" यह उत्सव लगभग दो दिन का होता था जिसमें पंजाब तथा अन्य प्रान्त से कलाकरों को आमंत्रित किया जाता था।

उत्सव के उदेश्य को स्मरण रखते हुए कलाकार दिए गए समय की अवधि में अधिक से अधिक रागों में पंजाबी भाषा की बंदिशों का गायन करते थे। कला की प्रस्तुति के दौरान प्रत्येक कलाकार स्वयं ही बंदिश के राग, ताल, शैली तथा प्रवर्त्तक के बारे में भी जानकारी देते थे। इस उत्सव में पंजाब और देश के अन्य हिस्सों से प्रसिद्ध शास्त्रीय कलाकारों को शास्त्रीय और अर्ध शास्त्रीय संगीत की विभिन्न शैलियों में पारम्परिक पंजाबी बंदिशें प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया जाता था। "पंजाबी शास्त्रीय संगीत की दुनिया में पंजाब के योगदान को लोग भूले हुए है पर अकादमी ने शास्त्रीय संगीत समारोहों का आयोजन कर यह बताया है कि ख़याल, ठुमरी, टप्पा शैली की ऐसी बंदिशें है जो कि पंजाब के शास्त्रीय संगीत के घरानों की और से भारतीय संगीत को दी गयी है। यद्पि आज इन बंदिशों को गाने वाले फनकार बहुत कम है, परन्तु फिर भी इन महान परम्परा को संभालने वाले फनकार मिले,और पंजाबी अकादमी ने उनको राष्ट्रीय मंच प्रधान किया।"5 चाहे यह उत्स्व 2017 तक करवाया गया किन्तु उन सभी वर्षों में पंजाबी अकादमी का प्रयास रहा है कि पंजाब के पारम्परिक संगीत को संभाले और गाने वाले श्रेष्ठ कलाकारों को आमंत्रित किया जाए। "पंजाबी अकादमी पंजाबी परंपराओं को संरक्षित करने के लिए अपने रचनात्मक प्रयास करती रही है।

ख्याल गायकी, ध्रुपद, ठुमरी पंजाब के शास्त्रीय संगीत की पारम्परिक रूप से समृद्ध शैलियाँ हैं। टप्पा भी शास्त्रीय संगीत की एक अन्य शैली है। शास्त्रीय संगीत गायन की इन पारम्परिक शैलियों की पंजाब की आत्मा में गहरी जड़ें हैं। पंजाबी संगीत के प्रसिद्ध

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

घराने, अर्थात् पटियाला घराना, दिल्ली घराना, शाम चुरासी घराना, तलवंडी घराना का पारम्परिक संगीत में अपना योगदान असीम और इन्हें आधुनिक युग के दर्शकों के सामने प्रस्तुत करके, अकादमी ने हमारी युवा पीढ़ी के साथ जुड़ने का प्रयास किया।"6

## उत्सव के उद्देश्य

- इस उत्सव या कार्यक्रम का उद्देश्य पंजाबी पारम्परिक संगीत का प्रचार और प्रसार करना था।
- पंजाब के शास्त्रीय और अर्ध शास्त्रीय संगीत पर आधारित पंजाबी भाषाई बंदिशों को इकट्ठा करना और अगली पीढ़ी के लिए इसे संरक्षित करना था।

## समारोह सूची

| उत्सव | वर्ष | कलाकार | कला |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 2001 | जवाद अली खान और मजहर अली खान | शास्त्रीय गायन |
| | | प्रो. अजीत सिंह पैन्तल और डॉ गीता पैन्तल | शास्त्रीय गायन |
| | | पूरण चंद और प्यारे लाल | सूफी गायन |
| | | श्री सुरिंदर सिंह | शास्त्रीय गायन |
| द्वितीय | 2002 | श्री मति प्रेमिला पूरी | शास्त्रीय गायन |
| | | पंडित लक्ष्मण कृष्ण राव पंडित | शास्त्रीय गायन |
| | | प्रो.सोमदत्तबट्टू | शास्त्रीय गायन |
| | | शन्नो खुराना | शास्त्रीय गायन |
| तीसरा | 2006 | बदर-उ-जमान और करम-उ-जमान | शास्त्रीय गायन |
| | | उस्ताद बलदेव सिंह नारंग (बी.एस.नारंग) | शास्त्रीय गायन |
| | | अजीत सिंह | शास्त्रीय गायन |
| | | प्रो. सोमदत्त बट्टू | शास्त्रीय गायन |
| चौथा | 2007 | बदर-उ-जमान और करम-उ-जमान | शास्त्रीय गायन |
| | | डॉ निवेदिता सिंह | शास्त्रीय गायन |
| | | बलदेव सिंह बाली | शास्त्रीय गायन |
| | | विद्याधर व्यास | शास्त्रीय गायन |
| पांचवां | 2008 | पं भीमसेन शर्मा | शास्त्रीय गायन |
| | | जवाद अली खान और मजहर अली खान | शास्त्रीय गायन |
| | | पं यशपाल | शास्त्रीय गायन |
| छठा | 2010 | जवाद अली खान और मजहर अली खान | शास्त्रीय गायन |
| | | प्रो. सोमदत्त बट्टू | शास्त्रीय गायन |
| | | डॉ निवेदिता सिंह | शास्त्रीय गायन |
| | | बी एस नारंग | शास्त्रीय गायन |
| सातवां | 2011 | शन्नो खुराना | शास्त्रीय गायन |

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | पं भीमसेन शर्मा | शास्त्रीय गायन |
| | | जवाद अली और मज़हर अली खान | |
| | | पं यशपाल | |
| आठवां | 2012 | तुषार दत्ता | शास्त्रीय गायन |
| | | भाई मोहन सिंह , सुखदेव सिंह | शास्त्रीय गायन |
| | | मीता पंडित | शास्त्रीय गायन |
| | | रज़ा अली खान | शास्त्रीय गायन |
| नौवां | 2013 | बलवंत सिंह नामधारी | शास्त्रीय गायन |
| | | बीएसनारंग | शास्त्रीय गायन |
| | | डॉ निवेदिता सिंह | शास्त्रीय गायन |
| | | बदर-उ-जमान और करम-उ-जमान | शास्त्रीय गायन |
| दसवां | 2014 | भाई बलजीत और भाई गुरमीत सिंह नामधारी | शास्त्रीय गायन |
| | | प्रो.सोमदत्त बट्टू | शास्त्रीय गायन |
| | | डॉ अलंकार सिंह | शास्त्रीय गायन |
| | | जवाद अली खान और मजहर अली खान | शास्त्रीय गायन |
| ग्यारहवां | 2015 | बलवंत सिंह नामधारी | शास्त्रीय गायन |
| | | श्री रज़ा अली खान | शास्त्रीय गायन |
| | | कुतुबी बंधू कव्वाल | सूफी गायन |
| | | यशपाल | शास्त्रीय गायन |
| बारहवां | 2016 | डॉ निवेदिता सिंह | शास्त्रीय गायन |
| | | बलवंत सिंह नामधारी | शास्त्रीय गायन |
| | | बी.एस.नारंग | शास्त्रीय गायन |
| | | उस्ताद इक़बाल एहमद खान | शास्त्रीय गायन |
| तेहरवां | 2017 | मीता पंडित | शास्त्रीय गायन |
| | | बलवंत सिंह नामधारी | शास्त्रीय गायन |
| | | डॉ अलंकार सिंह | शास्त्रीय गायन |
| | | सरदूल सिकंदर | सूफी गायन |

## समारोह व्याखया

**2001**

इस उत्सव के दौरान जवाद अली खान-मजहर अली खान जी ने राग हंसध्वनि (तीनताल) में 'साईआं वे नई अवंदा', राग बसंत (तीनताल) में 'अब मन भांवदा जोबन सफ़ा रंग दा', राग पुरिया धनश्री (तीन ताल) में 'अल्ला तू जानी जाने सबदे दिलां दा महिरमराज' ख़याल बंदिशों का गायन किया। इनके पश्चात् श्री सुरिंदर सिंह जी ने राग मालकौंस (झपताल) में 'माही नज़र न आवे कित वल जांवां नी सईयों', मालकौंस में 'साडे वेहड़े रांझां जोगी आया सब सखियाँ दें मन भाया' और एकताल (द्रुत लय) में 'जाणा तेरे नाल वे मैं' पंजाबी भाषाई ख़याल बंदिशों का गायन किया। उत्सव के अगले दिन प्रो अजीत सिंह पैंन्तल तथा डॉ गीता

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

पैन्तल जी ने राग यमन (एकताल) में 'यार दा मैनूं नित दा नीहोरा' और त्रिताल (मध्यलय) में 'सांवरे दी सूरत मैनूं भाँदी वे', मालकौंस तीनताल (मध्य लय) में 'तेरे अन्दर वसदा तेरा यार' आदि ख़याल बंदिशों का गायन करके उत्सव में रागमयी माहौल से श्रोताओ को मंत्रमुग्द किया।

**2002**

उत्सव के पहले दिन श्रीमति प्रेमिला पुरी जी ने राग गौड़सारंग त्रिताल मध्य लय में 'हो वो यार नज़र नहीं आवंदा, राग सिंधी भैरवी (रूपक ताल) में 'सालां वे पुषड़ा मोड़ मुहारां और राग मुल्तानी में 'जिंदरी लूटी वे यार ,यार सज्जन कदी मोड़ मुहारां ते आ वतन' में काफी शैली की बंदिशों का गायन किया। इनके पश्चात पंडित लक्ष्मण कृष्ण राव पंडित जी ने बागेश्वरी बहार में 'दिल नई लगदा वे अड़ेया', राग भैरवी में 'साढे नाल गल्लां करके चल मांडे दिल दें विछड़े दिया' में ख़याल की बन्दिशें गाई। समागम से दूसरे दिन सोमदत्त बट्टू जी ने पुरिया धनाश्री में 'चहींदड़ा जग दा', 'तैनूं अल्लाह दीओ मान' और 'कुँजन बन विच बैठे सँवारीआं बंसी बजावे रास रचावे', राग भूपाली में 'मैंनू चा मिलन दा गल्ले लगन दा', राग आसा में 'तनु गाफल जाग ना आई', राग तोड़ी में 'जिन्द जान तुसां तूं घोली नी', राग मालकौंस में 'लड़ फड़ दिलबर दरवेशां दा', राग अड़ाना में 'तान कप्तान केहला गएओ जगत में फ़तेह अली खान', राग सुहा कान्हड़ा में 'सजनवा मैंडे आये सब मिल गाए बजाए', राग शिवरंजनी में तूं ता मेरे ढोलन घर आवीं में ख़्याल बंदिशें तथा राग सिंधु भैरवी में आवो नी साईओं रल देवो नी वदाई काफी की बंदिश का गायन किया। इनके उपरंत शनो खुराना जी ने राग भीमपलासी 'ढोलन मैंडे घर आवीं सोना मियां मैं तैंडे सदके जांवां', राग जोगिया में 'एह नी चढ़खड़ा मैंनूं भांदा', राग हंसकंकणी त्रिताल में 'तेंडे रे घोल घोल घती मियाँ वे', ललित गोरी तीनताल में 'यार कटारी मैनु प्रेम दी आपे बोइ साईआं' ख़याल तथा राग पहाड़ी में 'लोकी ता देंदे मैनु ताने' टप्पा शैली की बंदिश का गायन किया।

**2006**

उत्सव के शुरुआत में बी एस नारंग जी ने राग मरवा में 'मौला मैं चुंन दुनिआ दे रंग सुर तेरे नाल सुर मिलावां', 'चांती मार यार दिल विच वेख मेरा यार दिल विच वसदा', राग देस में 'आया नी सांवल आया सादे वेहड़े खुशियां लेआया ख़याल बंदिशों तथा राग भैरवी में 'माही दूर वसेंदेया शम शम बरसन नैन' ठुमरी का गायन किया। उनके पश्चात् सोमदत्त बट्टू जी ने राग मुल्तानी में 'वे सईआं आवो चित न करोगे' और 'सूंदर सुरजन साई वे मनमाहीं वे' ,राग भीमप्लासी में 'जोगी ए तू जाने जम जम साध प्रेम मंतर दा जाप', 'सुर विच गावो नी बतावो न मेरे घरे आए', राग ललित गोड़ी में 'पैरां दी झांझर हली वे हली' ख़याल तथा 'शाम पई बिन शाम' पंजाबी अंग की ठुमरी और राग काफी में 'हो मियां जाने वाले गल्लां मेरी सुनंदा जावीं' टप्पा शैली में पंजाबी बंदिशों का गायन किया।

**2007**

उत्सव की शुरुआत बदर-उ-ज़मान और करम-उ-ज़मान बधुओं से हुई। उन्होंने राग पुरिया धनश्री(एकताल, विलम्बित लय) में 'जानी वे गुमान ना करिये' और 'चंगी नाइयों कितीयां सजन सादे नाल','तांगां वे मैनु तेरी लगीयाँ कानू चुठे लारे','जानी जान दे ना साड़ी चूड़ा मैंडा','पाया है कुझ पाया है' बंदिशों का गायन किया। उनके बाद डॉ निवेदिता सिंह जी ने राग यमन में 'यार दा मैनु नित दा नीहोरा', शुद्धकल्याण (एकताल, विलम्बित लय ) में 'दिल दा मालक सांई', राग जोगकौंस में 'मैं दमन तैंडे लगीं आ यार', राग देस में 'घोल घुमाई दरसन तैंडे दिल दी सेज विशांवां रांझन जे आवे घर मेंडे', (एकताल द्रुतलय) में 'वे कदी आवीं वे गुमानी डोला मैंडड़े कोल', 'सावन मायें सुहावना जो धरती बून्द पई' बंदिशों का गायन किया।

**2008**

समागम के पहले दिन पं भीमसेन शर्मा जी ने राग पुरिया में 'गुमानी यार वे तू साढे नाल', 'किसे नू की दसां की हाल वे दिल दा', राग सोनी में 'आवें तां सारे दुख दसां', राग पूर्वी में 'मथुरा ना जावे मेरा शाम', मन मंदिर विच जोट झले , राग सोहनी में 'सोहणी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सूरत तेरी यार वे', मरवा में किस चन्दरी चुराया दिल मेरे दिलबर दा', राग शिवरंजनी में 'मैंडा प्यारा नजर नहीं आंवदा वे' और राग बागेश्वरी में 'मैं वारी जावां मैनु तेंदरी याद मैनु तेनदरी आऊंदी याद' आदि ख़याल बंदिशों का गायन किया। उनके पश्चात श्री जवाद अली मज़हर अली खान जी ने राग जयजयवन्ती में 'ढोलन आवें ता मैं लावां नि कलावे ख़याल बंदिश का गायन किया। अगले दिन पं यशपाल जी ने राग सोहनी में सवाल आ मिल वे मैं तुद बिन रो रो हाल वंझावां', राग मालकौंस जी ने 'आंवदा जांवदा रहिओ वे मियां', राग केदार में 'रैहंदा ई यार दिल विच हर दम हर घड़ी हर पल', राग श्याम कल्याण में या रब कर बेड़ा पार', राग काफी कान्हड़ा में अविन वे दिलजानी में वारी जांवां' आदि ख़याल बंदिशों का गायन किया।

**2010**

उत्सव के पहले दिन पर राग नन्द में 'सोहना लगदा प्यारा लगदा नी मैनु', राग नन्द में 'कदी आ माही वे गल्ल लग तेरीयां राहवां तक्दी', राग हमीर (एकताल, मध्यलय) में 'मेंडे रे यार आवीं मियाँ', राग अड़ाना में 'मंदड़ा ना बोल बोलिये' गायन किया। इनके बाद में सोमदत्त बट्टू जी ने राग सरस्वती में 'माता शारदा विद्या दा दान देदे मैनु शुद्ध मान दे', 'पिया मेंडे घर आए बलमा मेरे द्वारे आए', राग बसंद बहार में 'ढोला केहड़ी गल्ल मेंडे नाल किती वे किती सो बीती', राग जोगिया 'सुन ढोला वे मियाँ सूती नु आनके जगाया', राग काफी में 'गल्लां मैंडी सुनंदा जावीं वे मियाँ' टप्पा का गायन किया। अगले दिन डॉ निवेदिता सिंह जी ने राग यमन में 'यार दा मैनु नित दा नीहोरा', शुद्धकल्याण (एकताल, विलम्बित लय ) में 'दिल दा मालक सांई', राग जोगकौंस में 'मैं दमन तैंडे लगीं आ यार', राग देस में 'घोल घुमाई दरसन तैंडे दिल दी सेज विशांवां रांझन जे आवे घर मेंडे', (एकताल द्रुतलय) में 'वे कदी आवीं वे गुमानी डोला मैंडड़े कोल', 'सावन मायें सुहावना जो धरती बून्द पई' बंदिशों का गायन किया। इनके पश्चात् प्रो बी एस नारंग जी ने राग रागेश्वरी में 'हिम्मत कदे ना हारिये रब्ब नु कदे ना विसारिये', 'भाग मेरे जागे गुरु चरणी चित लागे', राग सोहनी में 'किते मोरड़ दिलां दियां बागा नु' और 'मेरा शाम गवाचा नइओ लब्दा' भजन का गायन किया।

**2011**

18 मई 2011 को शन्नो खुराना जी ने राग बागेश्वरी में 'तैनू ना मैं शडेया वे रांझना लोकां दी मारा ने मारिया', बाबा फरीद जी द्वारा रचित 'जोबना जांदे ना डरां जे सह प्रीत ना जाये' ख़याल बंदिशों तथा राग जंगला (अड़ाचौताल) में 'दिलबर यार वे मैंडा मियाँ, राग पहाड़ी में 'रब्बा मेरेया लोकी तां देंदे साणु ताने', राग भैरवी में 'आंवां गले लगजा रांझणा तैंडे वे मिलन दा मैनु चा नी वे' में टप्पा गायन किया। उनके पश्चात् पंडित भीमसेन शर्मा जी ने राग पूर्वी (विलम्बित लय) में 'मथुरा ना जावे मोरा काहना तुसी मना करो नी गोपियों', मध्य लय में 'मन मंदिर विच जोत जले बाहर की ढोल रेहा सुन्न अंदर रब्ब बोल रेहा' , राग मरवा में 'बेकदरा वे तू मैंडी कदर ना पाई दिल लेके दे गेओ जुदाई', राग सोनी में 'किस चंदरी चुराया दिल मेरे दिलबर दा', राग बागेश्वरी में 'मैं वारी जांवां मैनु आउदड़ी तेंदड़ी याद', राग शिवरंजनी (मध्यलय) में 'नज़र नहीं आंवदा मैंडा यार वे में खड़ी बुलांवां दिलदारा बड़ा प्यारा' आदि पंजाबी भाषाई बंदिशों का गायन किया। 19 मई 2011 को जवाद अली और मज़हर अली खान जी ने 'कानू लाइयाँ प्रीतम तेरे नाल', राग कामोद (एकताल, मध्यलय) में 'रांझन घर आओ प्यारे लख लख खुशियां मनावां', राग यमन (त्रिताल मध्यलय) में 'मुख यार दा साढ़े मन भांवदा नाज़ अदांवां नाल मुख परचावंदा' और पंजाबी अंग में सूफी कलाम 'वे मियाँ तू रांझें दे नेड़े रेंदा' पंजाबी भाषाई बंदिशों का गायन किया। इनके पश्चात् पं यशपाल जी ने श्याम कल्याण (एकताल, विलम्बित) 'या रब्ब कर बेड़ा पार मैं आन पड़ी तुम्हारे द्वार', (त्रिताल, द्रुतलय )में 'दिल तैंडड़े बिन मेंडड़ा नइओ लगदा', राग केदार (एकताल) में 'रेंदाई यार दिल विच हर दम हर घड़ी हर पल', राग मालकौंस (एकताल, द्रुतलय) में 'आंवदा जांवदा राइओ वे मियाँ मुखड़ा वखाणवडा राइओ वे मियाँ', 'सांवल आ मिल वे मैं तुद बिन रो रो हारी' टप्पा (एकताल) 'जानीया वे दिलबर यार सजन आवे गल्ले लगजा' आदि बंदिशों का गायन किया।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

**2013**

समागम की शुरुआत भाई बलवंत सिंह नामधारी जी के गायन से हुई। उन्होंने राग मालकौंस में 'या रब्ब मेरी बेड़ी नु पार लंगा', 'राग कान्हड़ा में 'चले दल तेरे सतगुरु गोबिंद सिंह', राग अल्हैया बिलावल में 'स्वामी तैनू ओ दिन भूल गए', राग तोड़ी में 'जिंद जान तुसां संग घोली नी' आदि बंदिशों का गायन किया। उनके पश्चात बी एस नारंग जी ने राग रागेश्री में 'सतगुरु चरनी लग प्यारे', 'पाग मेरे जागे', राग मदमार सारंग में 'बंदेया रब्ब दे गुण गा', राग देसी में 'कदी आवी वे गुमानी ढोला', राग मरवा में 'सज्जन बिन जी नइओ लगदा मेरा', राग सोहनी में 'किते मोड़ दिला दिया बागा नू' ख़याल और राग पहाड़ी में 'मेरा शाम गुआचा नइओ लब्दा' भजन गायन किया। अगले दिन डा निवेदिता सिंह जी ने राग कलावती में विलम्बिर और द्रुत लय की बंदिशें 'आवीं वे ढोला रल के बहिये, लाल रंगीले आज घर आये' और राग जोगकौंस में चतुरंग का गायन किया। उन्होंने राग हमीर में प्रचलित पंजाबी बंदिश 'मेंडरे यार आवीं' तथा राग पहाड़ी में काफी शैली की बंदिश 'आवो सखी सहेलिओ' का गायन किया। उनके पश्चात् बदर-ओ ज़मान, करम-ओ-ज़मान बंधुओ ने राग यमन में विलम्बित और द्रुत लय की बंदिशे, राग पुरिया धनश्री में 'जानी वे गुमान ना करिये ' तथा 'चंगी नइओ कितीयाँ सज्जन साढ़े नाल' ख़याल बंदिशें तथा राग मिश्र काफी में 'शाह रांझां अलबेला' काफी शैली की बंदिश, तथा अंत में राग पहाड़ी में 'पाया है कुझ पाया है' भजन का गायन किया।

## निष्कर्ष

पंजाबी भाषाई बंदिशें पंजाब का बहुमूल्य खजाना हैं। जिसको पंजाबी अकादमी ने चौबीस वर्षों के कार्य द्वारा क्रियात्मक रूप में संरक्षित किया है। जिसका ज़िक्र डॉ गीता पैंन्तल जी ने अपनी पुस्तक "पंजाबी भाषा में ख्याल की पारम्परिक बंदिशें' में भी किया है। इस समारोह का विशेष महत्व ही पंजाबी भाषाई बंदिशों और पंजाब में विकिसित हुई गायन शैलियों का प्रचार प्रसार करना था जो कि उस समय दौरान केवल पंजाबी अकादमी ने ही किया। अकादमी के उद्देश्य के अनुसार समरोह में आये कलाकार चाहे वह पंजाब से हो या किसी अन्य प्रान्त और घराने से, उन सब ने पंजाब की पंजाबी भाषाई पारम्परिक बंदिशों का गायन पारम्परिक रूप के साथ किया। पंजाबी अकादमी दिल्ली द्वारा किए गए इस बहुमूल्य योगदान ने पंजाबी पारम्परिक संगीत, पंजाब के घरानों और उन्हें बनाने वाले कलाकारों के परचम को पूरे समाज और संगीत प्रेमियों तक पहुंचने का महान कार्य किया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से अकादमी ने पंजाबी भाषाई बंदिशों को संरक्षित करने में विशेष भूमिका निभाई।

## संदर्भ

पैंन्तल डॉ गीता, पैंन्तल (प्रो) अजीत सिंह, पंजाबी भाषा में ख्याल की पारम्परिक बंदिशें, संजय प्रकाशन दिल्ली, 2023, प्रस्तावना में से।

सिंह (डॉ) गुरनाम, पंजाबी भाषाई शास्त्रीय गायन बंदिशां, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, 1999, पृष्ट-2

पैंन्तल डॉ गीता, पैंन्तल (प्रो) अजीत सिंह, पंजाबी भाषा में ख्याल की पारम्परिक बंदिशें, संजय प्रकाशन दिल्ली, 2023, प्रस्तावना में से।

सिल्वर जुबली समारोह, विवरण पुस्तिका, पंजाबी अकादमी दिल्ली, 2006, पृष्ट- 4

सिंह (डॉ) रवैल, भूतपूर्व सचिव, पंजाबी अकादमी से किए गए साक्षात्कार से प्राप्त सूचना।

गोराया सिंह गुरभेज, भूतपूर्व सचिव, पंजाबी अकादमी से किए गए साक्षात्कार से प्राप्त सूचना।

पंजाब दे पारम्परिक संगीत दा उत्सव, विवरण पुस्तिका और सीडी, पंजाबी अकादमी दिल्ली, 1994, 2001-2017